B.Ed. — 19.2.1

बौद्ध शिक्षा का अर्थ :

बौद्ध दर्शन के अनुसार जीवन में दुःख-ही-दुःख है, और इन दुःखों को समझना तथा दुःखों के दूर करने के उपायों का उपयोग करना ही बोध कहा गया है। वास्तव में यही बौद्ध दर्शन की शिक्षा है। शिक्षा दुःखों का ज्ञान है और दुःखों को दूर करने का अष्टांग मार्ग प्रदान करती है। जब यह बोध अथवा अनुभूति होती है और इससे मुक्ति पाने का प्रयास किया जाता है, वही शिक्षा कहलाती है। अतः शिक्षा व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक जीवन में आर्य सत्य देने वाली तथा सद्मार्ग की ओर अग्रसर करने वाली प्रक्रिया है। बौद्ध दर्शन के अनुसार आत्म-बोध या आत्म-ज्ञान ही वास्तव में शिक्षा है। निर्वाण की अवस्था तक शिक्षा प्रक्रिया पहुँचती है।

महात्मा बुद्ध ने दुःख से मुक्ति का मार्ग अष्टांग मार्ग दिया। वह रास्ते मध्य कहा जाता है। इस मार्ग पर चलने के लिए शील, समाधि तथा प्रज्ञा प्राप्त करना आवश्यक है। शिक्षा द्वारा इन गुणों का विकास किया जाता है जिससे अविद्या का नाश होता है। इस प्रकार शिक्षा अष्टांग मार्ग का अनुशीलन है।

अष्टांग मार्ग

Scanned with CamScanner

(i) सांसारिक जीवन दुःखों से परिपूर्ण है।

(ii) दुःखों का कारण है।

(iii) दुःखों का अंत संभव है।

(iv) दुःख के अंत का उपाय है।

S. Kumar.

Scanned with CamScanner